जब हेरिएट, सोजॉर्नर से मिलीं

कैथरीन क्लिंटन

जब हेरिएट, सोजॉर्नर से मिलीं

कैथरीन क्लिंटन

जब अमेरिका युवा और नया था और आजाद होना चाहता था... तब अमेरिका में हर कोई आजाद नहीं था. यद्यपि देश ने सभी को आज़ाद करने की प्रतिज्ञा की थी – फिर भी देश अपने सभी वादों को पूरा नहीं कर पाया था.

दो मजबूत, बहादुर अश्वेत महिलाएं चाहती थीं कि अमेरिका, प्रत्येक अमेरिकी को स्वतंत्र पैदा होने और समान अवसर जीने की अनुमति देने के अपने वादे को पूरा करे.

यह हैरियट टबमैन और सोजॉर्नर ट्रुथ की कहानी है और वे एक बार आपस में कैसे मिलीं उसकी कहानी है....

उनमें से सोजॉर्नर ट्रूथ का जन्म पहले हुआ था— 1797 के आसपास एक दिन, हडसन वैली के पास, न्यू यॉर्क में. वो एक गुलाम माता-पिता की बेटी थीं. उनके माता-पिता एक धनी डच प्लांटेशन मालिक के गुलाम थे. उन्होंने अपनी बेटी का नाम इसाबेला रखा पर उसने अपने पिता का नाम अपनाया - बोमफ्री.

इसाबेला बोमफ्री, लेकिन वो मुक्त नहीं थी.

बोमफ्री का मतलब डच में "लंबा पेड़" होता है. वो नाम इसाबेला के अनुकूल था. वो मजबूत और ऊंची हो गई, अपने बारह भाइयों और बहनों के साथ खेतों में काम करते हुए वो एक मजनू के पेड़ की तरह झुक गई.

इसाबेला के जन्मस्थान से सैकड़ों मील दक्षिण में, मैरीलैंड के पूर्वी तट पर, 1825 के आसपास अरमिंटा नाम की एक युवा गुलाम लड़की का जन्म हुआ था.

अरमिंटा के माता-पिता अपने बेटे और बेटियों से प्यार करते थे. उन्होंने अपने बच्चों को पाला, लेकिन गुलामी की बुराइयों से उनकी रक्षा नहीं कर पाए.

अरमिंटा की दो बहनों को छीन लिया गया, चुरा लिया गया और उन्हें दक्षिण में बेच दिया गया. वे दूर चली गयीं लेकिन उनका परिवार उन्हें कभी नहीं भूला.

अरमिंटा ने स्वतंत्रता का सपना देखा, अपने पूरे परिवार के साथ पलायन करने का. उसे यह नहीं पता थे कि वो कैसे और कब होगा, लेकिन वो उड़ान के लिए तरस रही थी. एक दिन स्वतंत्रता की लड़ाई में वो हैरियट टबमैन के नाम से जानी जाएगी.
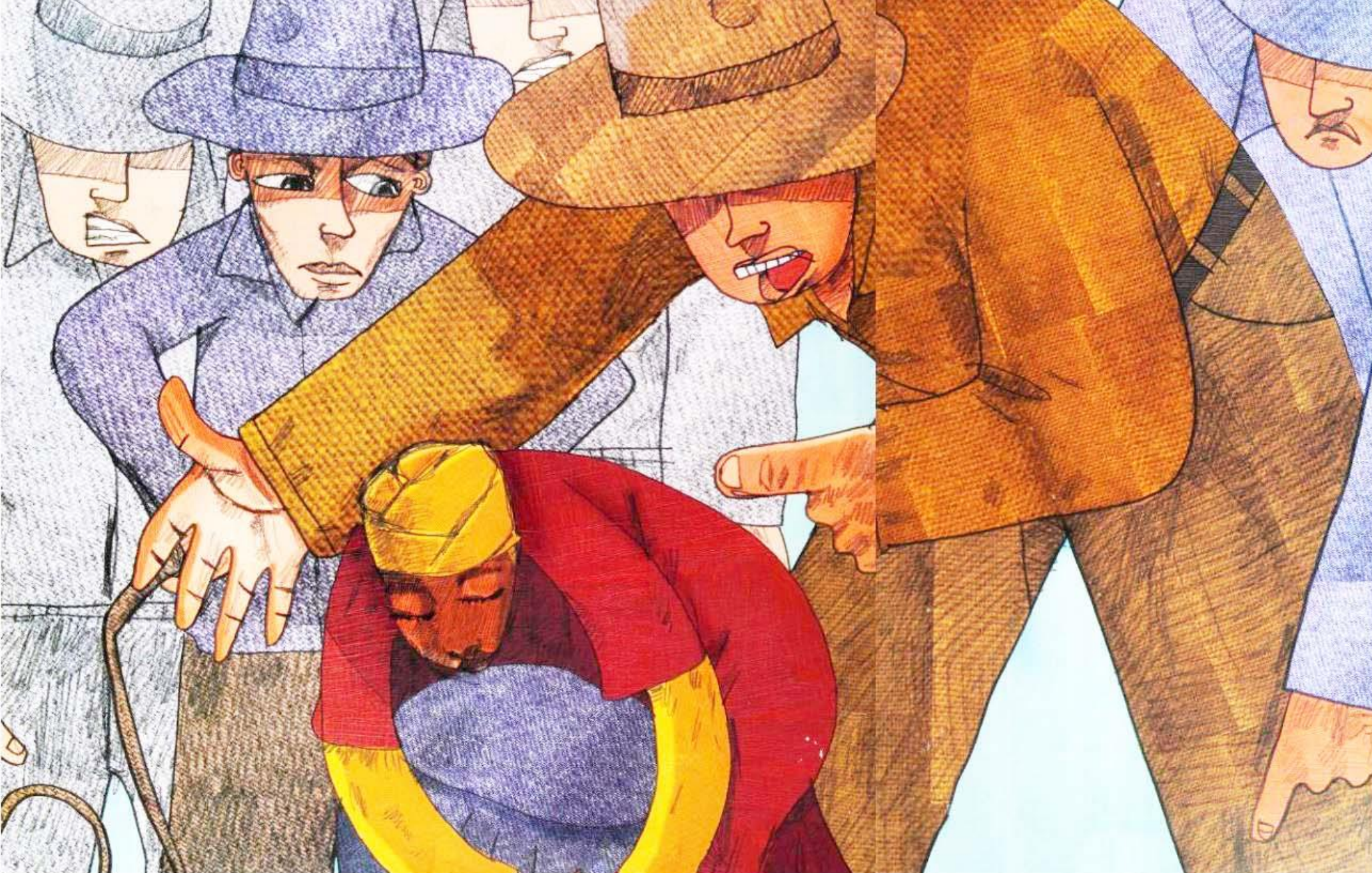
इसाबेला यह करो, इसाबेला वो करो! सुबह से शाम तक इसाबेला, मालिक के आदेश मानने को मजबूर थी. इसाबेला को अपने भाइयों और बहनों, उसके माता-पिता से बहुत दूर एक खेत से दूसरे खेत में भेजा गया. बेचारी इसाबेला.

एक बार उसे एक खेत में भेजा गया जहाँ पर लोग केवल अंग्रेजी बोलते थे. वो डच बोलती थी और इसलिए वो उनकी बात समझ नहीं पाती थी.

उसने अच्छा काम करने और आज्ञाकारी बनने की कोशिश की. वहां हर कोई जानता था कि वो एक अच्छी कार्यकर्ता थी. लेकिन एक अंग्रेज मास्टर ने उसे गालियां दीं और उसकी पिटाई भी की.

इसाबेला ने कसम खाई कि जब वो बड़ी हो जाएगी, तो वो गुलामी को पीछे छोड़ देगी. वो एक गरीब इसाबेला नहीं बनी रहेगी. वो उन लोगों को हरा देगी जिन्होंने उसे हराने की कोशिश की थी. और फिर उसने अपना नाम बदलकर सोजॉर्नर ट्रूथ रख लिया.

अरमिंटा ने भी कड़ी मेहनत की. उसने भी सात साल की उम्र से, अनेकों मालिकों की चाकरी बजाई थी. लेकिन एक दिन जब उसकी सहेली एक गुस्सैल ओवरसियर से दूर भागने की कोशिश कर रही थी तब अरमिंटा ने उसे बचाने की कोशिश की. जब ओवरसियर ने सीसे का एक भारी टुकड़ा फेंक कर मार, तो वो सहेली के बजाए अरमिंटा को लगा और वो उसकी खोपड़ी में धंस गया. उससे वो जमीन पर गिर पड़ी. वो लगभग मर चुकी थी!

उस ख़राब अवस्था में उसकी माँ उसे घर ले गयीं और उन्होंने अरमिंटा की बड़ी देखभाल की. माँ ने अपनी बेटी के बिस्तर के पास बैठकर उसे बाइबल की कहानियाँ सुनाईं —डेविड और गोलियथ की, शेर की माँद में डेनियल की, मूसा और लाल समंदर की. आखिरकार जब अरमिंटा ठीक हुई तो वो वाकई में एक चमत्कार था. लेकिन हैरियट की चोट का निशान हमेशा उसके साथ रहा, और वो उसे गुलामी की बुराइयों की याद दिलाता रहा. बाद में उसने अपने साहस से दूसरे गुलामों की बहुत मदद की.

इसाबेला तब तक बढ़ी और बढ़ी जब तक कि वो छह फीट लंबी नहीं हो गई. वो अपने इलाके की क्षेत्र की सबसे मजबूत मज़दूरों में से एक थी. कोई भी पुरुष उसकी बराबरी नहीं कर सकता था! उसने कड़ी मेहनत की, लेकिन उसके भीतर आजादी की चाह उबल रही थी. उसने एक और गुलाम से शादी की और उसके पाँच बच्चे हुए. उसकी बेटियाँ और बेटे उसकी तरह ही मजबूत थे.

1827 के बाद जब न्यूयॉर्क ने, गुलामी को गैरकानूनी घोषित करने वाला कानून पारित किया, तो इसाबेला को लगा कि भगवान ने उसकी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया था. उसके मालिक ने उसे एक साल में मुक्त करने का वादा किया. फिर वो महीनों, हफ्तों और दिनों की गिनती करती रही कि कब वो गुलामी से मुक्त होगी.
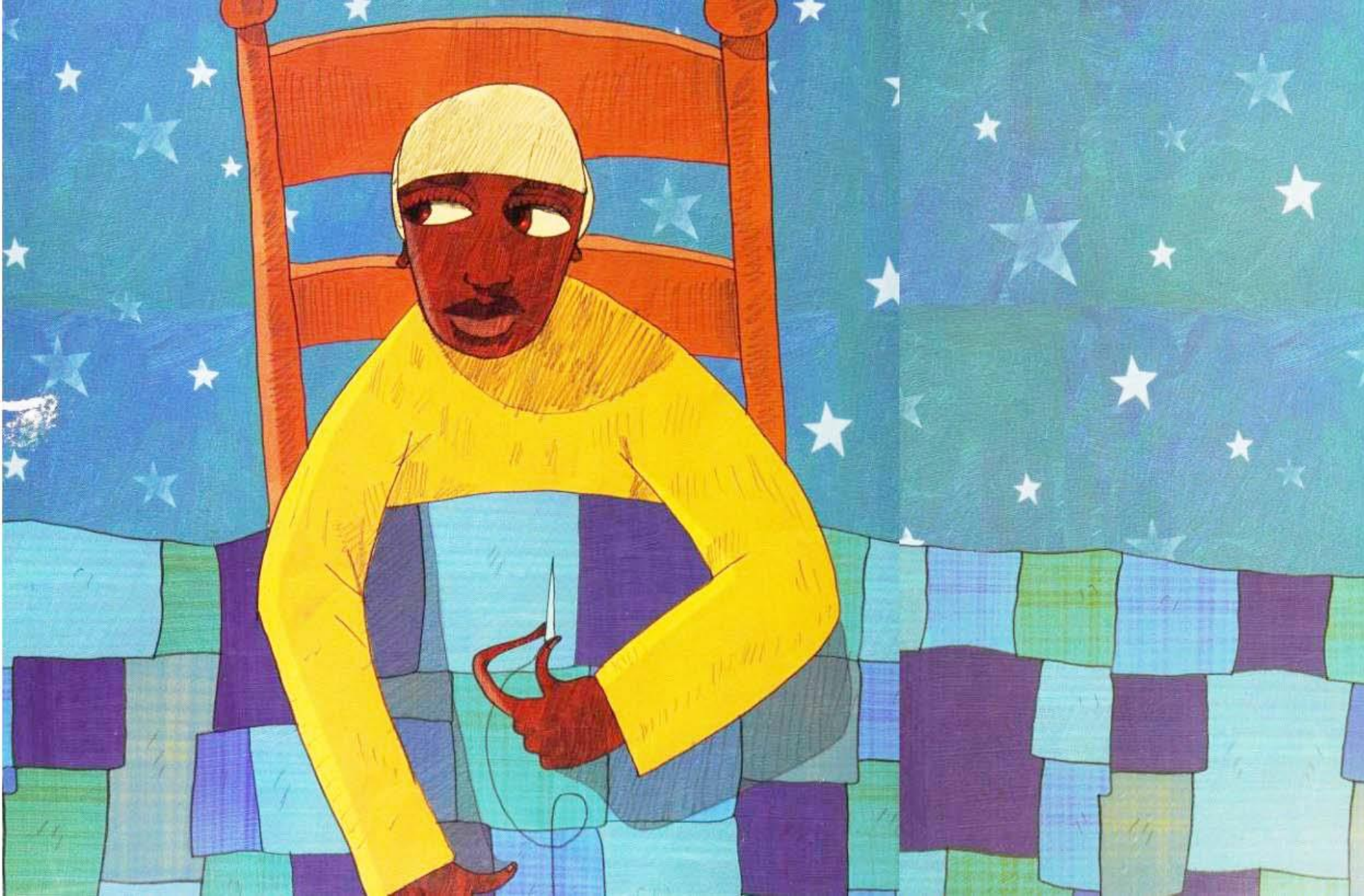
अरमिंटा भी अपनी स्वतंत्रता के लिए भूखी थी. उसे नीलामी में बेच न दिया जाए उससे वो बहुत डरती थी. उसके किसी भाई-बहन प्रियजन या उसे खुद नीलाम किया जा सकता था और उन्हें उच्चतम बोली लगाने वाले को बेचा जा सकता था.

इसलिए, जिस चिन्दियों की रजाई पर वो काम कर रही थी उसके हर वर्ग में उसने उत्तर की ओर भागने की अपनी योजना बनाई. उसमें धैर्य और कौशल लगा. उसे लोगों की बातों को सुनना पड़ा और उनसे सीखना पड़ा. पलायन के रास्ते के बारे में उसे भरोसेमंद सलाह की ज़रूरत थी. उसमें बड़ा विश्वास था और उसका विश्वास बड़ी चीजों को अंजाम देने के लिए बना था. उसे पता था कि एक बार जब वो गुलामी से आज़ाद हो जाएगी, तो वो अपने सपनों को साकार कर पाएगी.

इसाबेला ने अपने मालिक से उसे मुक्त करने के लिए बारह महीने तक धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा की. जब उसने आखिरकार मालिक का सामना किया, तो उसका मालिक अपने वादे से मुकर गया और उसने कहा कि इसाबेला को कुछ समय और गुलामी में रहना होगा.

लेकिन इसाबेला इंतजार करते-करते थक गई थी और इसलिए उसने खुद गुलामी की जंजीरें तोड़ने की ठानी. वो भाग निकली और उसने गुलामी को पीछे छोड़ दिया.

जब उसके मालिक ने अवैध रूप से इसाबेला के बेटे को बेचा, तो वो अपने बेटे को वापस पाने के लिए अदालत तक गई. इसाबेला अपने परिवार और दोस्तों के लिए ताकत का स्तम्भ बन गई. फिर उसने खुद को एक नया नाम दिया - सोजॉर्नर ट्रूथ. यह इस बात का प्रतीक था कि उसने फिर से नया जन्म लिया था. उसने अब स्वतंत्रता में जन्म लिया था और वो दूसरों को स्वतंत्रता पाने में मदद करने के लिए प्रतिबद्ध थी.

1849 में जब अरामिंटा के मालिक की मृत्यु तो उसने सोचा कि वो भी अपनी बहनों की तरह ही जल्द ही बेच दी जाएगी. इसलिए, अपने मालिक की मृत्यु के महीनों के भीतर, अरमिंटा ने मैरीलैंड का घर चुपके से छोड़ दिया. उसके लिए अपने परिवार को पीछे छोड़ना कठिन था. उसे अपने पति जॉन टबमैन को छोड़ना भी कठिन था, लेकिन उसे डर था कि उसने उन्हें तब नहीं छोड़ा तो फिर वो कभी नहीं छोड़ पाएगी! रात का स्याह आसमान और खामोश सितारे उसकी आजादी की उड़ान में उसके एकमात्र साथी थे.

सुरक्षित रूप से उत्तर की ओर पहुँचने के बाद, उसे वहां उसका स्वागत करने वाला एक समुदाय मिला. फिर उसने एक नया नाम, एक स्वतंत्र नाम अपनाया. उसने हैरियट नाम अपनाया, जो उसकी माँ का नाम था. हैरियट टबमैन के रूप में, वो अंततः स्वतंत्र थी - और हेरिएट टबमैन के रूप में, वो धीरे-धीरे स्वतंत्रता चाहने वालों की एक महान नेता बनी.

सोजॉर्नर ट्रूथ ने पूरे उत्तर में, मैसाचुसेट्स के तट से ओहियो के फलदार मैदानों तक, प्रचार किया और व्याख्यान दिए. उसने दासों और महिलाओं दोनों को मुक्त करने की अपील की, और उसकी गहरी, तेज आवाज ने श्रोताओं पर जादुई असर डाला.

एक बार, जब एक आदमी ने दर्शकों से कहा कि महिलाएं कमजोर होती हैं और उन्हें सुरक्षा की जरूरत होती है, और महिलाएं खुद की देखभाल नहीं कर सकतीं हैं, तो वो सुनकर सोजॉर्नर ट्रुथ को बेहद गुस्सा आया. वो खड़ी हो गई. वो पूरे छह फ़ीट ऊंची थी. उसने अपने एक हाथ को आगे बढ़ाया, जो वर्षों की गुलामी की मेहनत से बेहद एकदम मजबूत था, और फिर उसने पूछा: "क्या मैं एक महिला नहीं हूं?"
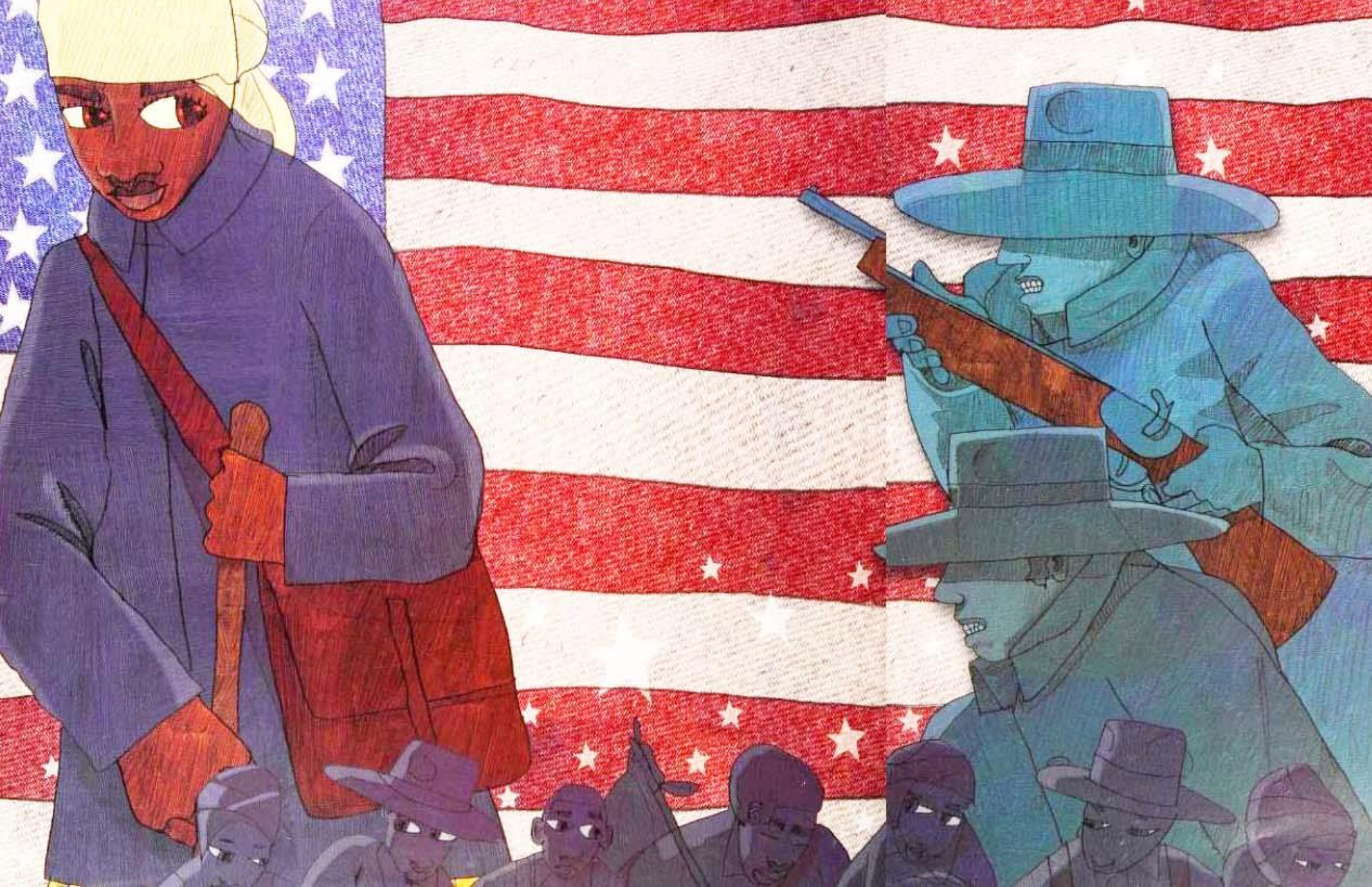
हैरियट टबमैन केवल पांच फीट ऊंची थी. उसने अंडरग्राउंड रेलरोड के साथ काम किया - जो अश्वेतों और गोरों का एक नेटवर्क था, और गुप्त रूप से सुरक्षा के लिए भगोड़ों का मार्गदर्शन करता था. उसके बाद टबमैन अपने लोगों के बीच एक महान नेता बन गई. वो अंडरग्राउंड रेलरोड, असल में कोई रेलमार्ग नहीं था, न ही वो भूमिगत था - लेकिन वो एक शक्तिशाली प्रतिरोध आंदोलन था, जो अन्यायपूर्ण कानूनों को हराने की कोशिश कर रहा था.

हैरियट ने खूनी कुत्तों और इनाम के लिए गुलामों को पकड़ने वाले शिकारियों को चकमा दिया और उसने सैकड़ों भागे हुए गुलामों को कनाडा तक पहुँचाया. उसने अपने प्रशंसकों से कहा. "मैंने रास्ते में कभी कोई यात्री नहीं खोया!" गृहयुद्ध के आने तक हैरियट सबसे प्रसिद्ध भूमिगत रेल कंडक्टर बन गई थी.

1861 में जब गृह युद्ध शुरू हुआ, तो सोजॉर्नर ट्रुथ और हैरियट टूबमैन दोनों ने, गुलामी के खिलाफ अपने-अपने अभियान जारी रखे.

ऊंची और उग्र सोजॉर्नर ने पूरे उत्तर में भाषण दिए, और अपने दर्शकों को संघीय सेना में भर्ती होने के लिए प्रेरित किया. उसका संघ के उद्देश्य में पूरा विश्वास था.

हेरिएट टबमैन, शांति से दक्षिण कैरोलिना में, दुश्मन की रेखाओं के पीछे एक जासूस के रूप में काम करती रही. उसने हमेशा की तरह खतरे को नजरअंदाज करते हुए आधी रात के समय वर्दी पहने हुए पुरुष फौजियों का नेतृत्व किया.

1864 के पतझड़ के समय जब सोजॉर्नर ट्रुथ अपने भाषण देने के दौरे पर थीं, तो वो बोस्टन में कुछ दिनों के लिए रुकीं. तभी इत्तिफाक से हैरियट टबमैन भी बोस्टन में थीं. उन्होंने कब्जे वाले दक्षिण में अपने युद्धकालीन काम के बीच कुछ समय निकाला था.

उन दोनों की बैठक पर किसी ने ध्यान नहीं दिया, न ही उसके बारे में कुछ लिखा, इसलिए हम केवल कल्पना ही कर सकते हैं कि उन्होंने एक दूसरे से क्या कहा होगा...
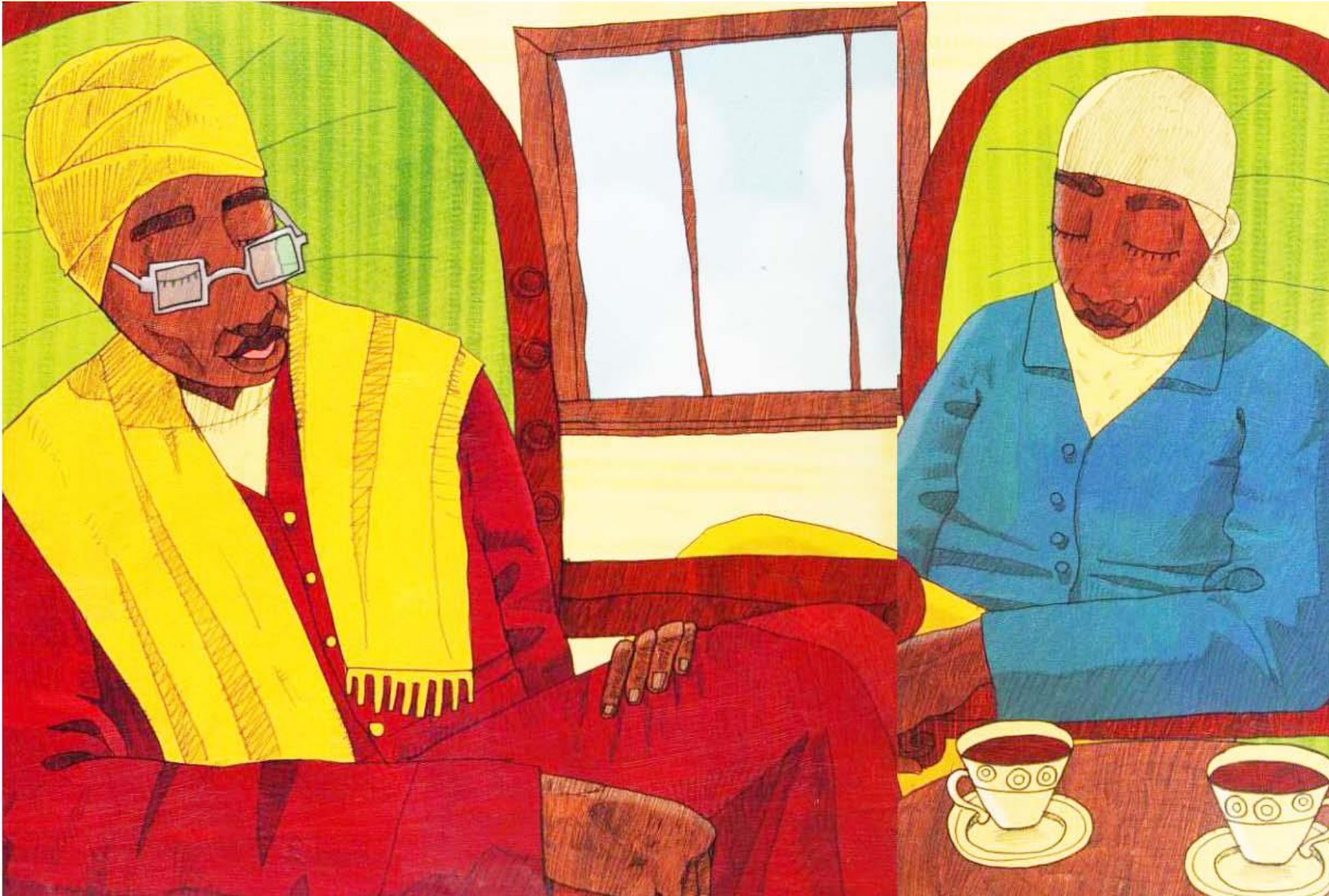
इतने सालों तक एक-दूसरे के बारे में सुनने के बाद, उन्होंने गर्मजोशी से एक-दूसरे को गले लगाया होगा, जैसे कि दो बिछड़े हुए रिश्तेदार आपस में मिले हों. लंबी महिला ने चश्मा पहना होगा और उन्होंने डच लहजे में बात की होगी, जबकि छोटी महिला ने अपने ख़ास दक्षिणी लहज़े में बात की होगी. लेकिन वे दोनों, एक ऐसे रिश्ते से जुड़ी थीं जो शब्दों से कहीं गहरा था, शायद खून से भी गहरा - उनमें एक आत्मीय रिश्ता था.

उनके पास एक-दूसरे को देने के लिए बहुत कुछ था, क्योंकि सोजॉर्नर, हैरियट की तुलना में बहुत लंबे समय से गुलामी से लड़ रही थीं. फिर भी वो उम्र में हेरिएट की तुलना में काफी छोटी थीं. हैरियट के पास साझा करने के लिए कई रोमांचक किस्से थे - गुलामों को अंडरग्राउंड रेलमार्ग द्वारा स्वतंत्रता के लिए ले जाना और कन्फेडरेट्स से लड़ना. उन कारनामों को सोजॉर्नर ने बड़ी दिलचस्पी से सुना होगा.

जब 1864 में उस अक्टूबर के दिन बोस्टन में उनका मिलना हुआ, तो उस अवसर को रिकॉर्ड करने के लिए वहां कोई फोटोग्राफर नहीं था. उस ऐतिहासिक बैठक को उजागर करने के लिए किसी समाचार पत्र ने उनका साक्षात्कार नहीं लिया. और जब वे जुदा हुईं तो हैरियट और सोजॉर्नर को नहीं पता था कि क्या वे फिर कभी एक दूसरे को देख पाएंगी. लेकिन कहानियों को साझा करने से उन दोनों में दोस्ती बनी, जिसे मीलों दूर होने पर भी उन्होंने याद रखा.

वो एक ऐसी स्मृति थी जो इन दिग्गज महिलाओं ने अपने शेष दिनों में अपने साथ रखी. बहन हैरियट! बहन सोजॉर्नर! आखिर में दोनों एक-साथ मिलीं!

उपसंहार

सोजॉर्नर ट्रुथ ने 29 अक्टूबर, 1864 को, व्हाइट हाउस में राष्ट्रपति लिंकन से मुलाकात की. वो इतनी सम्मानित होने वाली पहली अश्वेत महिला नेता थीं. फ्रीडमैन अस्पताल और अन्य धर्मार्थ कारणों के लिए काम करने के लिए वो वाशिंगटन में रहीं. जब ट्रुथ, बैटल क्रीक में युद्ध के बाद, अपने घर और परिवार के पास लौटीं तब उन्होंने महिलाओं के अधिकारों और नस्लीय सुधार के लिए अपना काम जारी रखा.
26 नवंबर, 1883 को उनकी मृत्यु हो गई और उनके अंतिम संस्कार में बड़े बैटल क्रीक के बहुत से लोग शामिल हुए.

युद्ध समाप्त होने के बाद हैरियट टूबमैन ऑबर्न, न्यूयॉर्क में अपने घर लौट आईं और उन्होंने दूसरों की मदद करने के लिए अपना जीवन समर्पित किया. उन्होंने सेना से निवृत्त लोगों, अनाथों, विकलांगों और बेघरों के लिए एक चैरिटी होम खोला. ऑबर्न में 10 मार्च, 1913 को अपनी मृत्यु से कुछ साल पहले ही उनका हेरिएट टबमैन घर दान कर दिया था. उन्हें सैन्य सम्मान के साथ दफनाया गया. उनके जीवन और विरासत का सम्मान करने वाली एक कांस्य पट्टिका, स्थानीय काउंटी प्रांगण में लगी है.